JAMNALAL BAJAJ
FOUNDATION

रामकृष्ण बजाज
अध्यक्ष न्यास मंडल –1979

न्यायमूर्ति श्री हिदायतुल्ला, जो कि हमारी परामर्शदाता परिषद के अध्यक्ष हैं, हाल ही में भारत के उपराष्ट्रपति निर्वाचित हुए हैं। हम सबके लिए इससे बढ़कर खुशी की बात और क्या हो सकती है। इससे पता चलता है कि उन्हें सबका आदर प्राप्त है। आज जबकि विघटनकारी प्रवृतियां सिर उठाये हुए हैं, न्यायमूर्ति हिदायतुल्ला इस गौरवशाली पद पर सर्वसम्मति से चुने गये हैं।

पिछले साल जब हम मिले थे, उसके बाद हमारे बजाज परिवार की एक ऐसी क्षति हुई है, जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती । हमारी पूज्य माताजी जानकीदेवी हमें छोड़कर चली गईं। वे जीवनभर गांधीजी के रचनात्मक कार्य के प्रति समर्पित रहीं। उससे प्रेरित होकर उनकी स्मृति में इस वर्ष हमने एक लाख रूपये का एक तीसरा पुरस्कार प्रारंभ किया है, जो समाज सेवा के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए किसी महिला या महिलाओं की संस्था को प्रतिवर्ष दिया जाया करेगा।

जैसा कि मैंने गतवर्ष बताया था, यह प्रतिष्ठान मेरे पूज्य पिताजी श्री जमनालालजी के स्मारक के रूप में उन आदर्शों और प्रवतियों को सहायता देने के लिए स्थापित किया गया है, जो उन्हें प्रिय थीं और जिनके लिए उन्होंने अपने जीवन का` गांधीजी की प्रेरणा और मार्ग –दर्शन में समर्पित कर दिया था।

श्रीमती सरलादेवी जब पहली बार वर्धा आईंऔर उन्होंने गांधीजी की सलाह पर नवभारत विद्यालय में, जिसकी स्थापना पिताजी ने की थी, काम करना आरंभ किया, उस समय मैं बालक था और स्कूल का छात्र था। श्रीमती सरला देवी से पढ़ने का मुझे अवसर भी मिला। उनकी पूर्ण सच्चाई और कार्य निष्ठा की एक –एक बात मुझे अच्छी तरह से आज भी याद है। वह अपने काम को किस समर्पण और विनम्रता से कर रही हैं, उसकी एक झलक प्रतिष्ठान को लिखे 15 सितम्बर के उनके पत्र से मिलती है। उन्होंने लिखा:

“आपकी चिट्ठी ने मुझे बड़ी ही विचित्र और बैचेनी की स्थिति में डाल दिया है। मैं विस्मय में पड़ गई हूं कि मेरा नाम किस तरह से श्री जुगतराम काका और सतीश बाबू जैसे महारथियों के साथ जोड़ दिया गया है। जिन्होंने मेरे नाम का प्रस्ताव किया था, उनसे मैं ने बार–बार अनुरोध किया था कि वे पुरस्कार के लिए मेरे नाम की सिफारिश न करें, क्योंकि मैं खूब अच्छी तरह से जानती हूं कि भारत में मुझसे भी कहीं ज्यादा योग्य और उपयुक्त कार्यकर्ता मौजूद हैं।”

अपने पत्र में उन्होंने यह भी लिखा था कि उनके नाम को चुनने में किसी कारणवश भूल या चूक हो गई हो तो निस्संकोच उसमें सुधार कर लिया जाय। आज के युग में इस तरह की अनासक्त भावना के दृष्टांत दुर्लभ हैं।

मुझे श्री बाबा आम्टे की कुछ संस्थाओं में जाने का अवसर मिला। मैं आनंदवन और सांघी निकेतन गया, जिनकी वरोरा में महारोगी सेवा समिति के अंतर्गत स्थापना की गई है। आनंदवन में मेरे मन पर इस बात की गहरी छाप पड़ी कि वहां पर सारा कार्य समर्पित भावना से किया जा रहा है। मैंने अपने को बिलकुल दूसरी ही दुनिया में पाया, जहां कार्य और व्यवहार की पद्धति उन पद्धतियों से कुछ भिन्न दिखाई देती थी, जो आमतौर पर आज अधिकांश संस्थाओं में देखने में आती हैं। उस जगह पर कार्य–कुशलता, पूरी तरह से साफ–सुथरापन और निष्ठा को देखकर मुझे बचपन के वे दिन याद आ गये, जो मैंने गांधीजी और पिताजी के साथ बिताये थे। इस बात पर विश्वास करना मुश्किल था कि एक पूरे परिवार ने गरीबों और दिन –दलितों की सेवा में अपने को समर्पित कर दिया है। गांधीजी कहा करते थे कि कोई व्यक्ति विशेष सेवा में अपने को लगा सकता है और अपना सम्पूर्ण जीवन उस काम में खपा सकता है, लेकिन अगर वह सच्चाई और गहराई से उ स काम में डूबा है, उसने अपना हृदय और आत्मा उसमें उंडेल दी है तो वह अपने निकट के लोगों को भी उस मिशन को हाथ में लेने के लिए प्रेरित कर सकता है। बाबा आम्टे ऐसी ही समर्पित आत्मा हैं, जिन्होंने अपने समूचे परिवार को अपने मिशन में सम्मिलित होने के लि ए अनुप्राणित किया है। उनकी समग्री निस्स्वार्थ–वृत्ति और काम के प्रति समर्पण की अविचल भावना ने उनके परिवार के प्रत्येक सदस्य को प्रेरित किया है। उनकी पत्नी श्रीमती साधनाताई की सेवा –निष्ठा तो अपूर्व रही है। उसके लिए वह स्वतंत्र रू प से पुरस्कृत हुई हैं। उनके अतिरिक्त दोनों पुत्र डा. विकास और डा. प्रकाश तथा उनकी पत्नियों डा. भारती और डा. मंदाकिनी और उनकी पुत्री श्रीमती रेणुका और उसके पति श्री विलास मनोहर और उनकी अविवाहित पुत्री बिजली, सबको उनके काम में पूरे दिल और मुक्त भाव से जुट जाने की प्रेरणा दी है।

मैंने श्री जयंत शामराव पाटिल के कृषि संस्थान को तथा दूसरी संस्थाओं को, जो कोसबाद हिल पर उसके साथ सम्बद्ध हैं, गहरी उत्सुकता से देखा। उन्होंने वकालत का क्षेत्र छोड़कर पूज्य काकासाहब कालेलकर तथा स्वामी आनंद की प्रेरणा से लोकसेवा का व्रत धारण किया और सेवा के लिए ग्रामीण जनता का क्षेत्र चुना। उस क्षेत्र में लगभग 30 वर्षों से उन्होंने वैज्ञानिक शोध का जो कार्य किया है, उससे निस्संदेह ग्रामीण जनता की गरीबी और अज्ञान को मिटाने में काफी मदद मिलेगी। आवश्यकता इस बात की है कि उनके इन प्रयोगों को देशव्यापी बनाया जाय। उनके कार्य में उनकी सुयोग्य पत्नी श्रीमती मीनाताई का विशेष हाथ रहा है। वह डिप्टी कलक्टर की बेटी हैं। श्री जयंतभाई के चेतावनी देने पर भी उनसे विवाह किया और शहरी जीवन के चकाचौंध से हटकर ग्रामीण जीवन की सरलता, स्वच्छता और सेवा का जीवन अंगीकार किया।

इस अवसर पर मुझे स्व. श्री श्रीमन्नारायण का अभाव विशेष रू प से खटक रहा है, जो शुरू से ही इस प्रतिष्ठान के प्राण और इस योजना को सफल बनाने में सतत प्रयत्नशील रहे।